© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section: Engineering and Technology

''भासकृत अभिषेकनाटकम् में नैतिकता एक अध्ययन''

शोधच्छात्रा
पूजा जायसवाल
नेट / जे0आर0एफ0
संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद।

संस्कृत साहित्य एवं नैतिक मूल्य का प्राचीनकाल से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। साहित्य वस्तुतः समाज का दर्पण होता है जिसमें समाज के अन्तः एवं बाह्य दोनों पक्षों का सांगोपांग विवेचन किया जाता है। संस्कृत साहित्य सम्पूर्ण विश्व में ऐसा श्रेष्ठतम धरोहर है जिससे धर्म, दर्शन, अध्यात्म आदि का सम्मिलित रूप से विवेचन हुआ है। नीति और अध्यात्म के अनुरूप आचरण करना ही नैतिकता है। महाभारत में भगवान वेद व्यास नैतिकता में परिगणित संतोष को बड़े ही सुन्दर रूप में परिभाषित करते हुये यह सूक्ति दी है–

संतोषो वै स्वर्गतमः परमं सुखम्।[1]

नीतिशतकम् में मृदुवचन को बड़े ही उत्क्रष्टतम ढंग से परिभाषित किया गया है–

वाण्येका समलंकरोति पुरूषं या संस्कृता धार्यते।
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।[2]

सुंसस्कृत वाणी ही एक वस्तु है जो मनुष्य को सुशोभित करती है सब भूषण तो नष्ट हो जाते हैं परन्तु वाणी रूपी भूषण ही सदा बना रहता है कभी नष्ठ नहीं होता।

महाकवि भास संस्कृत साहित्य के प्राचीनतम् नाटककार हैं। महाकवि भास की नाटकीय कुशलता का परिचय उनके नाटकों की संख्या और विषय से ही हो जाता है।

महाकवि भास के नाटक में उनके नायक अपने आचरण एवं शील में नीति का विशेष ध्यान रखते हैं। उचित–अनुचित दोनों पक्ष भास के पात्रों के चरित्रों में दिखाई देतें हैं, उसी के अनुसार उनके नैतिक मूल्य भी उसके अनुपात में अच्छे और बुरे रूप में दिखाई पड़ते है। नीति निर्वाह में नैतिकता का प्रभाव भास के पात्रों में है। भारतीय संस्कृति में नैतिकता सदा उच्चतम रूप में रही है। भास की सम्पूर्ण कृतियों में यही बात पायी जाती है।

महाकवि भास द्वारा रचित अभिषेक नाटक छः अङ्कों वाला नाटक है जिसमें किष्किन्धाकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड पर्यन्त संक्षेप में वर्णन है। अभिषेक नाटक–नैतिकता का ज्ञान कराने वाला नाटक है , जिसमें

[1] महाभारत, शान्ति पर्व 27 / 12
[2] नीतिशतकम् 16वॉ श्लोक

राम का शरणागत की रक्षा, सुग्रीव की सच्ची मित्रता, हुनमान का भक्ति के प्रति श्रद्धा आदिगुण स्पष्ट दिखाई देते हैं।

नाटक के आरम्भ में राम का अपने शरण में आये हुए सुग्रीव की रक्षा करना, बाली द्वारा पूछे जाने पर आपने हमें क्यों मारा तब राम कहते है–

भवता वानरेन्द्रेण धर्माधर्मौ विजानता।

आत्मानं मृगमृछिश्य भ्रातृदाराभिमर्शनम्।।[3]

आप वानरराज है, धर्माधर्म का ज्ञान रखते हैं, अपने को मृग कहें और भाई की स्त्री को दूषित करें, यह कैसे ठीक होगा। एक ओर राम शरणागत आये हुये सुग्रीव की रक्षा करते हैं दूसरी और बाली को नैतिकता का अवबोध कराते हैं बाली को अपने किये हुये कार्यों का प्रतिफल मिलता है।

इसी क्रम में परिगणित स्त्री के प्रति सम्मान की भावना का एक उत्तम उदाहरण विभीषण रावण को समझाते हुये कहते हैं–

प्रसीद राजन्! वचनं हितं में प्रदीयतां राधव धर्मपत्नी।

इदं कुलं राक्षसपुङ्गवेन त्वया हि नेच्छामि विपद्यमानम्।।[4]

महाराज कृपा कीजिए मैं आपका हित कर रहा हूँ, आप राम की पत्नी सीता को लौटा दें, मैं नही चाहता कि आपके द्वारा राक्षसश्रेष्ठ इस कुल का विनाश उपस्थित हो। कोई दुराचार करने लगता है तब उसको अपने लोगों द्वारा समझाये जाने पर भी समझ नहीं आता है। विभीषण रावण को बार–बार समझाता है लेकिन रावण विभीषण की तनिक भी नहीं सुनाता है, विभीषण को घर से निकाल देता है विभीषण सत्य को जानते हुये राज्य से निकल जाता है। विभीषण जाते समय रावण से मृदुवचन से युक्त बात कहता हैं–

शासितोऽहं त्वया राजन्। प्रयामि न च दोषवान्।

त्यक्त्वा रोषं च कामं च यथा कार्यं तथा कुरू।।[5]

महाराज, आपने मुझे आज्ञा दे दी, मैं जाता हूँ, अब मेरा दोष नही, क्रोध एवं काम को छोडकर जो उचित हो वैसा कीजिए। इस प्रकार विभीषण में 'भातृप्रेम' की भावना स्पष्टतया प्रकट होती है।

राम के प्रति विभीषण के मन में किसी प्रकार के छल–कपट की भावना नहीं रहती है, परन्तु वह रावण का भाई है, उसके मन में संकोच रहता है कि पता नही राम मेरी भावना को समझेंगे या नही।। इसी आशंका को रखते हुए विभीषण का यह कथन है–

कुद्धस्य यस्य पुरतः सहितोऽप्यशक्तः

---

[3] अभिषेकनाटकम् 1/20
[4] अभिषेकनाटकम् 3/19
[5] अभिषेकनाटकम् 3/26

स्थातुं सुरैः सुररिपोर्युधि वज्रपाणिः।

तस्यानुजं रघुपतिः शराणागतं मां

किं वक्ष्यतीति हृदयं परिशङ्कितं में।।[6]

जिस रावण के सामने देवों के साथ इन्द्र भी नहीं ठहर पाते हैं, उसी के भाई विभीषण को शरणागत रूप में उपस्थित देखकर राम क्या कहेंगे, यही आशंका मेरे हृदय मे हो रही है। विभीषण राम से मिलकर खुश होते हैं और प्रेम पूर्वक अपनी बात कहते हैं–

भवन्तं पद्ममपत्राक्षं शरण्यं शरणागतः।

अद्यास्मि कुशली राजंस्त्वद्दर्शनविकल्मषः।।[7]

कमलनयन शरणागतवत्सल श्रीमान् की शरण में आकर तथा आपके दर्शनों से विगतपाप होकर मैं आज सकुशल हो सका हूँ।

आगे एक स्थान पर सीता का वर्णन द्रष्टव्य है– सीता पतिव्रता स्त्री है रावण द्वारा बहुत प्रलोभन देने पर भी वह अपने पतिव्रता धर्म को नही छोड़ती है रावण यहाँ तक कहता है कि मैंने राम, लक्ष्मण का वध कर दिया है। सीता को विश्वास दिलाने के लिए दो कटे हुए सिर लाकर रखता है लेकिन सीता उसकी बातों का विश्वास नहीं करती है।

रावण के अन्दर क्रोध और अभिमान कूट–कूट कर भरा रहता है वह किसी की भी बात नहीं मानता हैं, लेकिन सन्तानस्नेह जो साधरणतः जगत में देखा जाता है उसके मन में भी विद्यमान रहता है मेधनाद की मृत्यु का समाचार सुनकर वह व्याकुल होकर कहता है–

इदानीमपि निःसन्देहो वत्सेनेन्द्रजिता विना।

कष्टं कठोरहृदयों जीवत्येष दशाननः।।[8]

पुत्र इन्द्रजीत के नही रहने से निःसन्देह तथा कठोर हृदय यह दशानन अभी भी जी रहा है घोर कष्ट है। राम को सीता के ऊपर पूर्ण विश्वास रहता है, परन्तु लोगों के विश्वास के लिए सीता की अग्नि परीक्षा ली। अग्निदेव नें स्वयं आकर राम से निवेदन किया कि यह लक्ष्मी है विशुद्ध चरित्रा है। तब राम ने सीता के प्रति अतिविश्वास से युक्त वचन कहा–

जानतापि च वैदेह्या': शुचितां धूमकेतन।

प्रत्ययार्थं हि लोकानामेवमेव मया कृतम्।।[9]

---

[6] अभिषेकनाटकम् 1/20
[7] अभिषेकनाटकम् 4/11
[8] अभिषेकनाटकम्, 5/14
[9] अभिषेकनाटकम्, 6/29

हे अग्नि! मै सीता की पवित्रता को जानता हूँ लोक के विश्वासार्थ ही मैंन ऐसा किया है, राम सीता की अग्नि परीक्षा लेकर यह सन्देश देते हैं कि मनुष्य को अपने पराये की भावना नहीं रखनी चाहिए। सबके लिए न्याय समान रूप से होना चाहिए।

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि वाल्मीकि रामायण पर आधारित ''अभिषेकनाटकम् नैतिकता का अवबोधन कराने वाला रूपक है। आधुनकिता के दौर में आज हमारा समाज नैतिक पतन की ओर अग्रसर हो रहा है यदि प्रत्येक व्यक्ति सदाचार और चरित्रबल को जाने तो उच्च आदर्श स्थापित कर सकता है। बाली और रावण दोनों बहुत शक्तिशाली हैं, परन्तु उन दोनों के अनुचित कार्यों की वजह से सुग्रीव और विभीषण उनका साथ छोड़ देते हैं। सुग्रीव और विभीषण दोनों के अन्दर न्यायप्रियता, सत्यप्रियता और अहिंसा की भावना देखी जाती है। हनुमान का हृदय श्रद्धा–भक्ति और सेवा भाव से परिपूर्ण रहता है। राम का चरित्र उच्च आदर्श की परिसीमा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भासनाटकचक्रम्, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, संस्करण 2008
2. भासनाटकचक्रम, डॉ0 सुधाकर मालवीय भाग 1–2, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
3. महाकवि भास एक अध्ययन, आचार्य बलदेव उपाध्याय चतुर्थ संस्करण 1995 चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय शारदा निकेतन वाराणसी–2001 दशम् संस्करण
5. भास कृत अभिषेकनाटकम्, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी